UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 6.125 ISSN : 0976-6650

Shodh Drishti

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 13, No. 8 Year - 13 August, 2022

PEER REVIEWED JOURNAL

Editor in Chief
Prof. Abhijeet Singh

Editor
Prof. Vashistha Anoop
Department of Hindi
Banaras Hindu University
Varanasi

Dr. K.V. Ramana Murthy
Principal
Vijayanagar College of Commerce
Hyderabad

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
SRIJAN SAMITI PUBLICATION
VARANASI
E-mail : shodhdrishtivns@gmail.com, Website : shodhdrishti.com, Mob. 9415388337

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 13, No. 8, August, 2022
Impact Factor : 6.125
ISSN : 0976-6650

➪	हिंदी उपन्यासों में पर्वतीय नारी जीवन **डॉ० मुकेश सेमवाल**	141-144
➪	शैक्षिक अवसरों की समानता के सन्दर्भ में स्त्री शिक्षा **डॉ0 वीणा वादिनी अर्याल**	145-147
➪	बलराम की कहानियों में ग्रामीण जीवन **पवन कुमार शर्मा**	148-152
➪	जौनपुर जनपद में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक शैली तथा अध्ययन आदत में सम्बन्ध का अध्ययन **स्वराज गौतम एवं डॉ0 अंजनी कुमार मिश्र**	153-156
➪	ਸਾਹਿਤ, ਸਮਾਜ ਅਤੇ ਮੀਡੀਆ **ਕਰਨਵੀਰ ਸਿੰਘ**	157-159
➪	छत्तीसगढ़ी गीतों में राष्ट्रीय चेतना : लक्ष्मण मस्तुरिया के विशेष संदर्भ में **सीमारानी प्रधान एवं डॉ0 अनुसुइया अग्रवाल**	160-162
➪	मौर्योत्तर काल में उद्योग एवं व्यवसाय **डॉ0 दिनेश प्रताप सिंह**	163-166
➪	भारतीय मूर्तिशिल्प विधान पर शास्त्रीय साहित्य का प्रभाव **दिनेश पाल**	167-170
➪	समावेशी शिक्षा एवं दिव्यांग महिलाओं का सशक्तिकरण **वन्दना श्रीवास्तव**	171-174

UGC Approved Journal No. 49321
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 13, No. 8, August, 2022
Impact Factor : 6.125
ISSN : 0976-6650

भारतीय मूर्तिशिल्प विधान पर शास्त्रीय साहित्य का प्रभाव

दिनेश पाल
सहायक आचार्य, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हि.प्र.

संक्षेप

हमारे देश में प्रत्येक विज्ञान से जुड़े हुए शास्त्र उपस्थित है। इसी तरह से धातुमूर्ति विज्ञान से संबंधित भी अनेक शास्त्र व आगम भारतीय परिवेश में विद्यमान है जिनके आधार पर प्राचीन काल में मूर्तियों का निर्माण तथा उनको रंग किया जाता था। इस शोधपत्र में भारतीय मूर्ति शिल्प पर शास्त्रों के प्रभाव पर पर्याप्त चिंतन किया गया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य इन शास्त्रों को मनीषी जनों को इन शास्त्रों की सजीव उपस्तिथि का अहसास करना है। इन शास्त्रों में मुख्य शास्त्र मानसोल्लास मानसार आदि है।

महत्त्वपूर्ण शब्द - शिल्प शास्त्र, मानसोल्लास (आभिलाषितार्थं चिन्तामणि), शिल्परत्नम्।

मूर्तिशिल्प के निर्माण और शिक्षा के विषय में हमारे पौराणिक ग्रंथो में जगह- जगह पर प्रसंग मिलते हैं । अब तक ज्ञात तीन महत्त्व पूर्ण संस्कृत ग्रंथ ऐसे हैं, जिनमे धातु की मूर्तियों की ढलाई के विषय में विशेष रूप से चर्चा की गयी है और उन पद्धतियों का भी उल्लेख किया गया है, जिनका प्राचीन भारतीय धातु विज्ञान के विशेषज्ञ अनुसरण करते थे। प्राचीन संस्कृत-ग्रन्थों में तीन ऐसे ग्रन्थ हैं, जिनसे धातुमूर्ति निर्माण की पद्धतियों पर विशेष प्रकाश पड़ता है। ये ग्रन्थ हैं- मानसोल्लास (आभिलाषितार्थं चिन्तामणि), शिल्परत्नम् मानसार।

इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर प्राचीन भारत में धातुमूर्ति के शिल्प विज्ञान की नीव रखी गयी है।

पुस्तक प्रणेताओं ने निश्चय ही परम्परानुरूप काव्यात्मक शैली का प्रयोग इस तकनीकी विषय की व्याख्या के लिए भी किया है। फिर भी प्राचीन भारत की तकनीकी कुशलता का परिचय तो इनसे मिलता ही है। इन ग्रन्थों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि उस काल के शिल्पकार भी धातुमूर्ति के लिए लाक्षालोप पद्धति का ही प्रयोग किया करते थे। इन पुस्तकों में धातुमूर्ति की पद्धतियों की व्याख्या क्रमिक एवं संक्षिप्त है। मानसोल्लास[1] को इस विषय का प्राचीनतम ग्रन्थ माना गया है। "मानसोल्लास" जिसे "अभिलाषितार्थचिन्तामणि" के नाम से भी जाना जाता है। (मानस + उल्लास = मन का उल्लास) १२वीं शती का महत्वपूर्ण संस्कृत ग्रन्थ है। इतिहासकारों के मतानुसार इसकी रचना ११२९ ई में चालुक्यवंश के राजा सोमेश्वर तृतीय द्वारा की गयी थी। इस ग्रन्थ में राजा के १०० विनोदों का विवरण संकलित है। वास्तव में यह विश्व का प्रथम विश्वकोश (इन्साइक्लोपेडिया) है। इसमें राजा सोमेश्वर ने राजनीति, प्रशासन, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, खगोल विज्ञान, ज्योतिष, तर्क, पशु चिकित्सा, बागवानी, इत्र, भोजन, वास्तुकला, खेल, पेंटिंग, कविता और संगीत जैसे विषयों को संकलित कियागया है। इसमें गीत, वाद्य, नृत्य की तत्कालीन समाज में उपयोगिता और उनसे सम्बंधित प्रमुख सिध्दान्तों का विवरण है। चालुक्य वंशी राजा सोमेश्वर ने स्वयं इस ग्रन्थ को लिखा था। ऐतिहासिक क्रमानुसार इसमें संगीत के विविध आयामों को सुव्यवस्थित रूप से संकलित किया गया है और संगीत अध्ययन में राजा की विशेष रूचि समाज में संगीत के स्तरीय महत्व को स्पष्ट करता है।यह पांच पुस्तकों का संग्रह है जो की कुल १०० अध्यायों वाला एक विशाल ग्रन्थ है। यों तो यह पुस्तक विशेष रूप से धातुमूर्ति निर्माण पद्धति पर नहीं है। इसमें धातुमूर्ति निर्माण के अतिरिक्त विभिन्न विषयों की चर्चा भी की गयी है, किन्तु इसमें बीस श्लोकों (श्लोक '७८ से ९७ तक) में धातु प्रतिमा निर्माण और ढलाई की पद्धति की व्याख्या की गई है। इस ग्रन्थ में एक ठोस मूर्ति ढलाई की पद्धतियों का वर्णन है। धातु मूर्ति ढलाई की पद्धतियों का जो वर्णन इस पुस्तक में दिया गया है, उसे मुख्यतया हम चार वर्गों में रख सकते हैं– (अ) वर्तना (मोडेलिंग), (ब) साँचा निर्माण (मोल्डिग तथा इन्वेस्टमेंट), (स) ढलाई (कास्टिंग) तथा (द) परिमार्जन (फिनिशिंग)।

वर्त्तना– पुस्तक के इस भाग में मोम में मूर्ति निर्माण विधि का वर्णन किया गया है।